Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

Original Article

मानव हित के आलोक में बुद्ध का जीवन दर्शन

डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना
सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष - पाली विभाग,
किशोरी सिन्हा महिला महाविद्यालय, औरंगाबाद, (बिहार)

Manuscript ID: yrj-140305

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 3
July-August-Sept.- 2025
Pp. 57-62

Submitted: 1 July 2025
Revised: 22 July 2025
Accepted: 30 July 2025
Published: 10 Sept. 2025

Corresponding Author:
डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.18480745

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.18480745

Creative Commons

OPEN ACCESS

ई. पूर्व की पांचवी- छठवीं शताब्दी धर्म क्रांति की शताब्दी है। धार्मिक जगत में विलक्षण वैचारी के उहापोह होकर अभूतपूर्व धार्मिक आंदोलन प्रारंभ हुआ। भारत में जिन संप्रदायों का प्रदुभाव, हुआ वे हैं-प्रकुत ,कात्यान अजीत केश कम्बली, मखालीपुत्र गोशाल, संजय वेलट्ठिपुत्र, महावीर स्वामी एवं गौतम बुद्ध किंतु इन संप्रदायों में से केवल तीर्थंकर महावीर और तथागत बुद्ध की परंपराओं, कोहिन भारत भूमि पर फलने और फूलने का मौका मिला। धर्म -संस्थापक के रूप में तथागत बुद्ध सर्वाधिक प्रसिद्ध प्राप्त हुई शाक्यमुनि दृष्टा थे, तत्वदर्शी थे जिन्होंने सत्य का साक्षात्कार कर लिया था। यह सत्य ही बुद्ध का धर्म है। यह धर्म एक नीति शास्त्र है जिसकी आचार -संहिता सर्वाधिक विश्व व्यापी और सुविक्षित है यह व्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ मानव हित के आधार पर तथागत बुद्ध का जीवन दर्शन भी है।

भारतवर्ष में धर्म का अर्थ 'एक विशिष्ट जीवन - शैली' है। दर्शन इस 'जीवन शैली'का नियम निर्धारण करता है। इस दृष्टि से भारतीय धर्म तथा दर्शन जीवन के व्यवहारिक पक्षों की अरेना नहीं कर पाते।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*
How to cite this article:
डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना (2025). मानव हित के आलोक में बुद्ध का जीवन दर्शन. Young researcher, 14(3), 57–62.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18480745

बौद्ध धर्म एवं दर्शन एक भारतीय मूल का धर्म एवं दर्शन है। तदनुसार तथागत बुद्ध की धर्मदेशना भी जीवन के व्यवहारिक पक्षों मैं प्रविष्ट होती है। मनुष्य निर्विवाद रूप से एक सामाजिक प्राणी है। एक ' व्यक्ति 'के रूप में उसके जीवन और व्यक्तित्व पर उस समाज की स्पष्ट छाप होती है, जिसका हुआ सदस्य है। अएतव मनुष्य के जीवन को एक सार्थक दशा और दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से बौद्ध धर्म देशना मानव

जीवन के विवेचन तथा नियमन में भी प्रविष्टि होती है। शास्त्रीय बौद्ध ग्रंथों, यथा, अभिधर्मकोष, सुत्तपिटक, कथावत्थु, जातक कथा में मानव जीवन विषय कुछ मिथकीये आख्यान मिलते हैं जीन्से मानव - विषयक बौद्ध दृष्टि कोण का पता चलता है। इन आख्यानों की सीमा विश्व ब्रह्मांड की उत्पत्ति तथा उसमें मानव की स्थिति से लेकर मानव हित तथा विकास, मानव की उत्पत्ति तथा विकास, मानव समाज का भविष्य तथा आदर्श जीवन की अवधारणा तक विस्तृत है।

बुद्ध ने जीवन के एक नवीन पथ की ओर संकेत किया, सद्गुणों और सत्कर्मों के इस मार्ग पर चलने से प्रत्येक व्यक्ति जीवन तथा मरण के बंधन से मुक्ति पा सकता है। उन्होंने विवेकशील व्यवहारिक योजना बनाई जिसको अपने से मनुष्य सांसारिक बंधनों से मुक्त हो सकता है। बुद्ध के महा परिनिर्वाण के बाद उनके उपदेशों को बौद्ध धर्म के नाम से प्रख्यात किया गया। वे तर्क, बुद्धि और विवेक से उन्हीं बातों को मानते थे जो मनुष्य के परम कल्याण के लिए आवश्यक थी। वे बुद्धिवादी और यथार्थवादी थे। इसलिए बौद्ध धर्म बुद्धिवादी और प्रयोजनवादी हुआ।

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनके उपदेशों को बौद्ध धर्म के नाम से प्रख्यात किया गया। इस धर्म की कुछ विशेषताएं हैं। बुद्ध ने सृष्टि के सृजन, उसके तत्व, उन तत्व के धर्म सृष्टिकर्ता, उसका संसार और मनुष्य के संबंध में ईश्वर आत्मा के संबंध में आदि पर अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किये। यह विवाद ग्रस्त विषय मानवीय उत्कर्ष के लिए उन्होंने निरर्थक माने। इसलिए बौद्ध धर्म अध्यात्म शास्त्र नहीं है।

अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, धार्मिक परंपराओं और कर्मकांड के लिए उनके धर्म में कोई स्थान नहीं है, व तर्क, बुद्धि और विवेक से उन्हीं बातों को मानते थे जो मनुष्य के परम कल्याण के लिए आवश्यक है।

बौद्ध धर्म में अत्यंत व्यावहारिक दृष्टिकोण है। उसमें सम्यक विचार, सम्यक संपर्क संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक आचरण, सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक चेतना और सम्यक साधना यह सब व्यावहारिक नैतिक आचरण में आते हैं। बुद्ध का कथन था कि यदि मनुष्य अपने दैनिक जीवन में सतर्कता और सदाचारी हो, उसके विचार और आचरण में सुनता हो, काम, क्रोध, माया-मोह, राग - द्वेष और दुर्गुणों से मुक्त हो मन, वचन तथा कर्म से पवित्र हो, तो उसे मुक्ति के लिए ना वेदों का पठन - पाठन चाहिए, ना देवी देवताओं को आहुति और न यज्ञ की बलि ही, उन्होंने पशु बलि के स्थान पर अहिंसा और दया की शिक्षा दी, इन सब बातों को त्याग कर अंत: शुद्धि पर जोर दिया, अन्त : शुद्धि और सत्कर्म से बुद्ध ने समाज में नैतिक आदर्श को प्रस्तुत किया।

सृष्टि रचना, ईश्वर, आत्मा, संसार आदि के दार्शनिक विवेचन और झमेलों से बौद्ध धर्म दूर है, वह तो दुख, उसके कारण, उसका निरोध एवं उसके मार्ग पर चलकर सदाचारी जीवन के सिद्धांत, विराग, असंग्रह, निर्वाण, आदि उदात्त पर सुबोध सिद्धांतों पर आधारित है। साधारण से साधारण व्यक्ति भी इन्हें सरलता से हृदयंगम कर इनका अनुसरण कर सकता है। उनका निर्माण का सिद्धांत सबसे बड़ा आकर्षण है। बुद्ध ने अपने अनुयायियों से कहा- "वे धर्म के प्रत्येक

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

तत्वों को, स्वयं सोच- समझकर, बुद्धि-विवेक और तर्क के आधार पर ग्रहण करें।" वे एकमात्र अंध: श्रद्धा और एकमात्र जड़वादिता के विरोध में थे। स्वतंत्रता पूर्वक विचार कर तत्वों को ग्रहण करने की प्रवृत्ति बुद्ध का जीवन दर्शन है।

बुद्ध ने जाति - प्रथा के भेद भाव, भिन्न वर्गों में उच्च - नीच के भाव, निम्न स्तर के हीन व्यवसाय करने वालों की दशा के विरुद्ध अपना मत प्रकट किया। उन्होंने सबके लिए बिना किसी भेदभाव के उपदेश दिए, उनके उपदेश और सिद्धांत किसी वर्ग विशेष या संप्रदाय विशेष की संपत्ति नहीं है। सभी उन्हें अपना सकते हैं। इसलिए बौद्ध धर्म जातिवाद के विरोधी और लोकतंत्रत्मक धर्म है। वह आदि में, मध्य में और अंत में- सभी रूपों में कल्याणकारी है। वह तो बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय और लोकाअनुकंपाय के लिए तथा मानव की सुख शांति और मुक्ति के लिए है। वह वैश्विक दृष्टि में मानव हितकारी धर्म है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना है

बौद्ध दर्शन मानव जीवन का एक संपूर्ण दर्शन है। बुद्ध का धर्म संपूर्ण मानव जीवन का एक मार्ग है। संसार में बुध का मानवी जीवन दर्शन बहुत व्यापक है। बौद्ध धर्म के कई महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं और उन सिद्धांतों को समझ कर ही हम मनुष्य जीवन के, सृष्टि के संपूर्णरहस्य को जान सकते हैं। बुद्ध के दर्शन के हर सिद्धांत का एक दूसरे के साथ संबंध है। बौद्ध का दर्शन तत्कालीन अन्य भारतीय दर्शनों से एकदम नया दर्शन है। बुद्ध ने एक नया दर्शन, एक नई चिंतन प्रणाली एक नई जीवन दर्शन मानव हित के आलोक में एक नए जीवन का आदर्श स्थापित किया है। इसलिए तत्कालीन समाज के सभी वर्ग को प्रभावित किया था।

बुद्ध ने विकास की, परिवर्तन की, बदलाव की बात कही है। उन्होंने मनुष्य और मानवता की बात कही है। बुद्ध ने अपने समय के रुके हुए चिंतन की सभी दीवारों को तोड़ा। उन्होंने उसे समय के ब्राह्मणवादी वैदिक समाज दर्शन की सभी मान्यताओं को नकारा। बुद्ध ने बुद्धत्व लाभ के तुरंत बाद ही कहा था कि " मैं जीवन में अतिवाद को त्यागने का और मध्य मार्ग को अपनाने का उपदेश देता हूं।"बुद्ध का मध्यम मार्ग दुनिया के सभी दर्शनों में और मानवीय जीवन में सबसे क्रांतिकारी दर्शन है। यही मध्यम मार्ग सम्यक क्रांति का मार्ग है, व्यक्ति के विकास में आनेवाले बंधनों से मुक्ति का मार्ग है।

तथागत बुद्ध का जीवन दर्शन के मूल केंद्र में अविद्या (अज्ञानता) के आवरण में पड़ा मनुष्य भावाभाव को प्राप्त होता रहता है, जिससे सत्यमार्ग को छोड़कर असत्यमार्ग का अवलंबन कर लेता है। बौद्ध धर्म सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। शील के समाधान से मनुष्य मानवता के गुणों से समलंकृत हो जाता है। शीलवान मनुष्य समादर का पात्र होता है और स्व- पर कल्याण से समुपेत होता है। शील, सम्यक वचन, सम्यक कर्म एवं सम्यक आजीविका है। इस जीवन विधि को अपने से मानव का सर्वत्र कल्याण किया जा सकता है। सभी अकुशल कर्मों का त्याग, संपूर्ण कुशल कर्मों का संचय और चित् को निर्मल बनाते रहने से काय,मन,वचन शुद्ध हो जाते हैं और ईनकी शुचिता ही शील है। शील सभी कुशल धर्मो का आधार है।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

शिलं सब्बेसं कुसलानं धम्मानं आधारों अयं पतिट्
धरणीव पाणिनं इदं च मूलं कुसलाभिवुड्ढिया।
मुख्य चिदं सब्बाजिनानुसासने, यो सीलक्खन्धो वर
पातिमोक्खो ति।।[१]

शील का पाली ग्रंथों में विस्तार से वर्णन उपलब्ध है। उपासकों के लिए पंचशील तथा भिक्षुओं के लिए अनेक प्रकार के शील निर्देशित है। इनमें पंचशील सामानय जन के लिए अत्यंत उपयोगी है तथा मानव हित के लिए अत्यंत उपयोगी है। अहिंसा, त्याग, ब्रह्मचर्य, सत्य तथा मादक द्रव का परिवार्जन पंचशील है। इनका आधुनिक परिवेश में अत्यधिक महत्व है। आज की समस्याओं का समाधान इन से संभव है। पंचशील में प्रथम 'पाणातिपाता वेरमणी' प्राणिवध से विरत रहने का व्रत है। सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और मैत्री अहिंसा का आचरण है। हिंसा का मूल द्वेष है इसे जानकर अद्वेष की भावना करनी चाहिए जिससे सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और सद्भावना स्थापित होगी। मैत्री परहित कामता है तथा द्वेष, द्रोह से निस्सरण है। मैत्री भावना को भगवान बुद्ध ने सर्वाधिक महत्व दिया है। उन्होंने मैत्री विहार की प्रशंसा की है। अहिंसा ही जीवन - यापन की पर्यवदात विद्या है। इससे समाज में एक दूसरे के प्रति सद्भावना, सहभागिता तथा सर्वजनित जीवन की सद प्रगति होता है। भारत सर्वदा विश्व के साथ मैत्री भावना से अभी संबंध रहा है। आज विश्व में निश्चित रूप से आणविक युद्ध के मुहाने पर खड़ा है समूचा विश्व मानवता आज युद्ध की विभीषिका से असुरक्षित अनुभूति कर रहा है। सर्वत्र अशांति का वातावरण व्याप्त है। ऐसी स्थिति में पंचशील के प्रथम चरण को जीवन में आचरित किया जाए तो इस सामने आए युद्ध की विभीषिका से बचा जा सकता है। अतः अहिंसा आचरणीय है। इससे द्वेषबुद्धि का त्याग कर तथा प्रेम एवं मैत्री भाव का उदय स्वाभाविक है जो स्वयं के लिए भी और मानव कल्याण के लिए है। इसी से विश्व बंधुत्व और विश्व प्रेम की भावना परिकल्प है।

'सुखिनो वा खेमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु
सुखितत्ता'।[२]

अहिंसा संपूर्ण धर्मों का सार है।[३] चार ब्रह्म बिहार में मैत्री ब्रह्म बिहार अति उत्तम है।

पंचशील का द्वितीय चरण 'अदिन्नदाना वेरमणी ' है जिसका अर्थ सत्कर्म रहित है। त्याग की भावना भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। परिग्रह दोष युक्त है और अपरिग्रह सर्वथा सर्वमान और प्रशंसनीय आचरण है। परिग्रह के कारण समाज में संपन्नता एवं विष्णता व्याप्त है। त्याग क्या भाव में आर्थिक विषम विषमता व्याप्त है। ऐसी स्थिति में यदि प्रत्येक व्यक्ति त्याग भावना से अनुपर्णित हो तो निश्चय ही सामानता एवं संपनता आ सकती है और आर्थिक सामाजिक विषमता दूर किया जा सकता है विषमता दूर हो सकता है।अतः ' अदिन्नादाना वेरमणी ' शील का प्रचार प्रसार एवं आचरण करने की आवश्यकता है। समानता का जीवन तभी उपलब्ध हो सकता है जब बौद्ध धर्म के तत्वों को आचरित किया जाय। यदि को लोभ और परिग्रह की भावना को समाप्त किया जा सके तो अवश्य इस विषमता एवं असमानता को समाप्त किया जा सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि बुद्ध उपदेशित शील रूप धर्म का पालन किया जाए तथा त्याग की भावना के महत्व को समाज में

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

प्रतिष्ठित किया जाए तब मानव कल्याण की भावना सर्वोपरि होगी। सभी सुख समृद्धि से युक्त हो शांति को प्राप्त कर सकते हैं। लोभ एवं तृष्णा के समूल विनाश से ही यह संभव है।

ब्रह्मचर्य पंचशील का तृतीय चरण है। यह श्रेष्ठ आचरण का द्योतक है। ब्रह्मचर्य किसी भी समाज या राष्ट्र का बाल और उत्साह का द्योतक है। ब्रह्मचर्य को भगवान बुद्ध ने उत्तम उत्तम कार्य कहां है। ब्रह्मचर्य के अभाव में अराजकता, चरित्रहीनता, जनसंख्या वृद्धि जैसी विश्व व्यापी समस्याओं ने समाज को ग्रसित कर लिया है जिससे मानव जीवन बहुत त्रस्त है। जहां कि नारियां संपूजित, सुसंस्कृति रही है, लोहा की नारियां आज परतंत्र एवं भयभीत है जनसंख्या वृद्धि का परिणाम अत्यंत भयावह है। इसका एकमात्र निदान संयम तथा ब्रह्मचर्य का आचरण है। सम्यक पर्यतन के द्वारा ब्रह्मचर्य के आचरण से ही जनसंख्या वृद्धि का समाधान हो सकता है तथा एड्स जैसे भयावह रोगों से मुक्ति पाया जा सकता है। इसलिए बुद्ध ने ब्रह्मचर्य की महत्व को प्रतिस्थापित करते हुए 'अब्रह्मचरिया वेरमणी ' का उपदेश दिया है संपूर्ण बुद्ध दर्शन को ब्रह्मचर्य कहते हैं - 'सिक्खत्तयसग्डहितं सकलसासनमि्प ब्रह्मचरियं '। अतः ब्रह्मचर्य उत्तम है, क्योंकि यह निर्माण की अधिगम का मार्ग है।[४]

पंचशील का चतुर्थ महत्वपूर्ण अंग सत्यवादिता है (मूसावादा वेरमणी)। प्रायः सभी महापुरुषों ने सत्य की महिमा का गुणगान किया है। सत्य ही शिव और सुंदर है। सत्य यथातथ्य एवं यथाभूत प्रतिपादित करता है।[५] सत्य वचन श्रमणपाथ में अप्रिय प्रतीत होता हुआ भी सर्वदा हितकर एवं मानव हितकारी है। मनुष्य सत्य का आचरण करता है तो अपना तथा समाज का अत्यंत कल्याण करता है। सत्यभाषी सर्वदा उचित, सार्थक आपस में मेल और प्रेम बढ़ाने वाला होता है। फलस्वरूप वह अनुचित कार्य से अपने को बचता है। अतः सत्य ही श्रेष्ठ है, मानव हितकारी है ऐसा समझकर सत्य का अनुगमन करना अपना हित एवं मानव हित के लिए अत्यंत लभकार है।'नहि सत्यात परो धर्म ' सत्य से परे और कोई धर्म नहीं है। सत्य से इस लोक में भी सुख मिलता है तथा परलोक में भी परम पद (निर्वाण) को प्राप्त किया जा सकता है।'सत्य'मनुष्य के वाणी का अलंकार है, सत्यवादी की सर्वत्र प्रशंसा होती है। सुभाषित वचन को भगवान बुद्ध ने उत्तम एवं मानव कल्याणकारी कहा है।

सुभाषितं उत्तममाहू सन्तो,धम्मं भने नाधम्मं तं दुतियं।
पियं भणे नाप्पियं तं ततियं, सच्चा भणे नालिकं तं चतुत्थं।।[६]

पंचशील का पांचवा अंग मद्यपान से विरक्त होना है। मादक द्रव्यों के सेवन से मनुष्य विवेक हिन हो जाता है। इसलिए 'सुरामेरयमज्जप्पमादट्ठाना वेरमणी ' का शील में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मद्यपान करने वाले का चेतन विघटित हो जाती है और मद्यपोषक द्रव्यों के क्रय के कारण आर्थिक विप्णता घेर लेती है। आज के परिपेक्ष, विशेष कर युवा वर्ग में मद्यपान के कारण अवंशछित उच्छृख्डलता समाहित हो गई है। यहां तक की जीवन हानी के समाचार आए दिन प्राप्त होते रहते हैं। विष से भी भयावह वस्तु समझकर मद्यपान से विरात रहना अपने लिए एवं मानव जीवन के लिए हितकारी है। अतः '

मद्यपान से विरति ' रूपशील का पालन श्रेष्ठ जीवनशैली के लिए नितांत आवश्यक है। भगवान बुद्ध ने मद्यपान के संयम को उत्तम कहा है।

बुद्ध का जीवन दर्शन का सिद्धांत एक वहती निर्मल जलधारा है, कोई धार्मिक नहीं है। तथागत बुद्ध ने यही कहा था कि "मेरा धम्म नाव की तरह पर होने के लिए है, सर पर ढोने के लिए नहीं।"बुद्ध का धम्म मानव मुक्ति के लिए है। बुद्ध का धम्म समाज में परिवर्तन के लिए है, मनुष्य के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए है, जीवन में प्रकाश फैलाने के लिए है। इसलिए हम सभी को अपने सामाजिक जीवन में और व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन लाने के लिए तैयार रहना चाहिए। अतः हम यह कह सकते हैं कि बौद्ध दर्शन के जीवन मूल्यों को अपनाकर मानव हित के साथ-साथ विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देकर विश्व में शांति लाया जा सकता हैं।

संदर्भ:

१. वि० म०.
२. सु० नि०, पृ -१,८.
३. धम्मपद, पृ०-१३५.
४. दी० नि०, पृ-५
५. सुभाषित सू०, पृ०-११०.
६. मगलसुत्त